कुंआरी मां प्राणियों में अनहोनी बात नहीं है

हाल के दो अनुसंधानों से पता चलता है कि कुंआरी मादा द्वारा शिशु पैदा किया जाना काफी आम बात है। और दूसरी बात यह पता चलती है कि ऐसे शिशु स्वयं भी इसी तरीके से बच्चे पैदा कर सकते हैं।

वैसे तो कई प्राणी (जैसे कोमोडो ड्रेगन और घरेलू मुर्गियां) नर से समागम के बगैर बच्चे पैदा कर लेते हैं। मादा जंतु इसके लिए अपने अंडों में किसी तरह से गुणसूत्रों का एक अतिरिक्त सेट जोड़ देती हैं। इस तरह से, नर से समागम के बगैर, जो संतान पैदा होती हैं वे उस मादा की क्लोन होती हैं। मगर ये संतानें प्रायः अनुर्वर (निसंतान) होती हैं। अर्थात ये संतानें एक पूर्ण विराम होती हैं। और इस प्रकार का प्रजनन बहुत ही कम देखा गया था। इसे अनिषेकजनन (पार्थेनोजेनेसिस) कहते हैं। मगर अब तस्वीर बदलने को है।

अब पहली बार शोधकर्ताओं ने देखा है कि ऐसे अनिषेकजनन से उत्पन्न संतानें स्वयं भी अनिषेकजनन के तरीके से संतानें उत्पन्न कर सकती हैं। अर्थात अनिषेकजनन से उत्पन्न संतान अनुर्वर नहीं होती।

अनिषेकजनन का पहला अवलोकन बावेरियन कलेक्शन फॉर ज़ुऑलॉजी के निकोलस स्ट्रौब के नेतृत्व में किया गया। उन्होंने बंदी अवस्था में एक मादा बम्बू शार्क (*चिलोस्काइलियम प्लेजिओसम*) का लगातार अवलोकन किया। जेनेटिक परीक्षण से पता चला कि उसकी संतानों का कोई पिता नहीं है, वे किसी नर से समागम के बगैर पैदा हुई थीं। और तो और, इनमें से एक मादा संतान ने अनिषेकजनन द्वारा शिशुओं को जन्म दिया। इस अवलोकन का मतलब है कि अनिषेकजनन से उत्पन्न संतानें अनुर्वर हों, यह ज़रूरी नहीं है।

दूसरे अध्ययन में शोधकर्ताओं ने पाया कि सांपों की 20 प्रजातियों में अनिषेकजनन काफी प्रचलित है। कनाडा के गुलेफ विश्वविद्यालय के जिम बोगार्ट का कहना है कि शार्क मछली सम्बंधी उक्त अध्ययन और *बायोलॉजिकल जरनल ऑफ लीलियन सोसायटी* में प्रकाशित सांप सम्बंधी शोध पत्र का आशय यह है कि अनिषेकजनन बहुत बिरली बात नहीं है और जैव विकास की दृष्टि से अंधी गली नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***

पत्रिका न मिलने सम्बंधी सूचना फोन या ई-मेल पर दे सकते हैं

ई-मेल : srotefeatures@gmail.com, circulation@eklavya.in